माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
अर्थशास्त्र	1 4 0	हिन्दी

स्टीकर/तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

[redacted]

मांक 319- 1154678

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में: | 2 | 9 | 6 | 5 | 2 | 9 | 3 | 7 | 0 |

शब्दों में: | दो | नौ | छः | पाँच | दो | नौ | तीन | सात | शून्य |

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

क :- पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में ✗ शब्दों में ✗

ख :- परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 06

ग :- परीक्षा का दिनांक 20 03 2019

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकण्ड्री परीक्षा

केन्द्र 651039

केन्द्र क्र.6

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
धर्मेन्द्र सिंह सोलंकी (हस्ताक्षर)	(हस्ताक्षर)

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
श्री... सहायक ...	K. ... Adhyapak, AD-1377

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

कुल प्राप्तांक

② [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 2 के अंक कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 01 के उत्तर

अ) i) व्यक्तिगत इकाई ।

ब) ii) स्थानापन्न वस्तुएँ ।

स) ii) पूर्ति ।

द) iii) परिवर्तनशील लागतें शून्य हो जाती हैं ।

इ) iii) माँग तथा पूर्ति दोनों के द्वारा ।

प्रश्न क्र. 02 के उत्तर

अ) एकाधिकार ।

ब) अंतिम ।

स) कीन्स ।

द) अधिक ।

इ) मजदूरी ।

(3) + =

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ | कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 03 के उत्तर

अ) सत्य

ब) असत्य

स) सत्य

द) असत्य

इ) सत्य

प्रश्न क्र. 04 के उत्तर

'अ'		'ब'
अ) लोचपूर्ण विनिमय दर	–	v) सरल प्रणाली
ब) विदेशी विनिमय दर का निर्धारण	–	iv) माँग तथा पूर्ति शक्ति द्वारा
स) अधिकतम सामाजिक लाभ का सिद्धांत	–	i) डाल्टन
द) करारोपण का सिद्धांत	–	ii) समानता का नियम
इ) जट प्राप्तियाँ	–	iii) राजस्व प्राप्तियाँ + पूँजीगत प्राप्तियाँ

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 05 के उत्तर

अ) बजट के संगठक — 1) बजट की तैयारी।
2) बजट का प्रस्तुतीकरण।
3) बजट पर सामान्य बहस।
4) पृथक बजट।
5) बजट का क्रियान्वयन।

ब) भारत में वित्तीय वर्ष की अवधि 1 अप्रैल से 31 मार्च तक है।

सB विस्तार की गणना का सूत्र (R) = L − S.

द) S आधार वर्ष के निर्देशांक का मूल्य 100 होता है।

E

इ) फिशर का आदर्श निर्देशांक = $\sqrt{\frac{P_1 q_0}{P_0 q_0} \times \frac{P_1 q_1}{P_0 q_1}} \times 100$

प्रश्न क्र. 06 का उत्तर

लागत :— एक फर्म में वस्तु की एक निश्चित मात्रा को उत्पादित करने वाले साधनों को उनके पारिश्रमिक हेतु प्रदान किया गया सामान्य लाभ, मजदूरी, वेतन व ब्याज आदि का योग लागत कहलाता है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 07 का अथवा का उत्तर

सकल राष्ट्रीय उत्पाद :— सकल राष्ट्रीय उत्पाद एक वर्ष में चालू उत्पादन से वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह का बाजार मूल्य पर कुल माप है जिसमें विदेशों से प्राप्त शुद्ध आय को जोड़ दिया जाता है।

प्रश्न क्र. 08 का उत्तर

प्रभावपूर्ण माँग :— प्रभावपूर्ण माँग से आशय रोजगार निर्धारण के उस बिंदु से है जिस पर समग्र माँग, समग्र पूर्ति के बराबर होती है और वे दोनों एक-दूसरे को उस बिंदु पर काटती (प्रतिच्छेद) करती हैं।

प्रश्न क्र. 09 का उत्तर

प्रामाणिक मुद्रा :— प्रामाणिक मुद्रा को प्रधान पूर्णकाय मुद्रा भी कहा जाता है। यह प्राय: सोने व चाँदी की बनी होती है। इसका अंकित मूल्य व वास्तविक मूल्य बराबर होता है। यह असीमित विधिग्राह्य है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 10 का उत्तर

निर्देशांक :— निर्देशांक या सूचकांक एक समूह के विभिन्न परंतु संबंधित चरों के सामान्य स्तर की दशा में तुलना करने की एक सांख्यिकीय विधि है।

प्रश्न क्र. 11 का उत्तर

B
S
E

स्थिर लागत तथा परिवर्तनशील लागत में अंतर :—

	स्थिर लागत	परिवर्तनशील लागत
1)	स्थिर लागत का संबंध उत्पादन के स्थिर साधनों से होता है।	परिवर्तनशील लागत का संबंध उत्पादन के परिवर्तनशील साधनों से होता है।
2)	उत्पादन बंद कर देने पर भी स्थिर लागतें शून्य नहीं होती।	उत्पादन बंद कर देने पर परिवर्तनशील लागतें शून्य हो जाती हैं।
3)	कुल लागत में से परिवर्तनशील लागत घटाने पर स्थिर लागत प्राप्त होती है।	कुल लागत में से स्थिर लागत घटाने पर परिवर्तनशील लागत प्राप्त होती है।

[ ] + [ ] =

पृष्ठ अंक   कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 12 का उत्तर

मॉग की लोच :- कीमत में परिवर्तन के परिणामस्वरूप माँग में जिस अनुपात से परिवर्तन होता है, उसे माँग की लोच कहते हैं।

प्रो. फ्लक्स द्वारा माँग की लोच ज्ञात करने का निम्न सूत्र प्रतिपादित किया गया है -

$$\text{माँग की लोच} = \frac{\text{माँग में अनुपातिक परिवर्तन}}{\text{कीमत में अनुपातिक परिवर्तन}}$$

या

$$\text{माँग की लोच} = \frac{\text{माँग में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

प्रश्न क्र. 13 का उत्तर

अपकिरण के उद्देश्य :- अपकिरण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

1) माध्य से औसत दूरी ज्ञात करना :- अपकिरण का पहला उद्देश्य समंक श्रेणी के माध्य से विभिन्न पद-मूल्यों की औसत दूरी ज्ञात करना होता है।

प्रश्न क्र.

2) श्रेणी की रचना के विषय में ज्ञान :— अपकिरण के द्वारा श्रेणी की रचना के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। जैसे- माध्य के दोनों ओर पद-मूल्यों का बिखराव किस प्रकार है ?

3) एकरूपता ज्ञात करना :— अपकिरण का अध्ययन, विभिन्न श्रेणियों के मध्य एकरूपता ज्ञात करने के लिए भी किया जाता है।

प्रश्न क्र. 14 का उत्तर

निर्देशांक का महत्व :— निर्देशांक का महत्व इस प्रकार है :

1) जीवन-स्तर के तुलनात्मक अध्ययन में सहायक :— निर्देशांक के द्वारा सामान्य नागरिकों तथा मजदूरों के जीवन-स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

2) मुद्रा की क्रयशक्ति में परिवर्तन का ज्ञान :— निर्देशांक के द्वारा समय-समय पर मुद्रा की क्रयशक्ति में होने वाले परिवर्तनों को जाना जा सकता है।

3) राष्ट्रीय आय में परिवर्तन का ज्ञान :— निर्देशांक के द्वारा राष्ट्रीय आय में होनेवाले परिवर्तन को जाना जा सकता है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 15 का अथवा का उत्तर

व्यष्टि अर्थशास्त्र की विशेषताएँ :— व्यष्टि अर्थशास्त्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :—

1) व्यक्तिगत इकाइयों का अध्ययन :— व्यष्टि अर्थशास्त्र वैयक्तिक या विशिष्ट आर्थिक इकाइयों का अध्ययन करता है। इसके द्वारा संपूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन नहीं किया जाता।

2) अर्थव्यवस्था के छोटे भागों का अध्ययन :— व्यष्टि अर्थशास्त्र अर्थव्यवस्था के छोटे भागों का अध्ययन करता है। इस दृष्टि से एक उद्योग का अध्ययन इसके अंतर्गत किया जाता है, यद्यपि उद्योग कई फर्मों से मिलकर बना है परंतु यह अर्थव्यवस्था की एक छोटी इकाई है।

3) पूर्ण रोजगार की मान्यता :— व्यष्टि अर्थशास्त्र की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अपूर्ण रोजगार की उपेक्षा कर पूर्ण रोजगार को मान्यता दी जाती है।

4) कीमत-सिद्धांत :— पूर्ण रोजगार की मान्यता के कारण प्रमुख समस्या साधनों के बँटवारे की होती है जो कीमतों के आधार पर किया जाता है। इस कारण 'कीमत-यंत्र' व्यष्टि अर्थशास्त्र का मुख्य तत्व है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 16 का उत्तर

बाजार मूल्य तथा सामान्य मूल्य में अंतर :–

	बाजार मूल्य	सामान्य मूल्य
1)	बाजार मूल्य अल्पकालीन मूल्य होता है।	1) सामान्य मूल्य दीर्घकालीन मूल्य होता है।
2)	बाजार मूल्य वास्तविक मूल्य होता है।	2) सामान्य मूल्य काल्पनिक मूल्य होता है।
3)	बाजार मूल्य माँग तथा पूर्ति की अस्थायी शक्तियों द्वारा निर्धारित होता है।	3) सामान्य मूल्य माँग तथा पूर्ति की स्थायी शक्तियों द्वारा निर्धारित होता है।
4)	बाजार मूल्य पर पूर्ति की अपेक्षा माँग का अधिक प्रभाव रहता है।	4) सामान्य मूल्य में माँग की अपेक्षा पूर्ति का अधिक प्रभाव रहता है।

B S E

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 17 का उत्तर (अथवा)

व्यापारिक बैंकों का महत्व :— व्यापारिक बैंकों का महत्व इस प्रकार है :—

1) **साख का सृजन :—** व्यापारिक बैंक अपनी जमाओं के द्वारा साख का सृजन करते हैं। बैंकों के कारण ही लोग अपना रुपया बैंकों में जमा करते हैं तथा भुगतान भी चेकों के द्वारा करते हैं। इस प्रकार बैंकों की साख-मुद्रा में वृद्धि हो जाती है।

B S E

2) **ग्राहकों को लाभ :—** व्यापारिक बैंक अपने ग्राहकों के अंशों का क्रय-विक्रय भी करते हैं साथ ही वह अपने ग्राहकों के लिए ट्रस्टी प्रबंधक आदि का कार्य करते हैं। इस प्रकार ग्राहकों को इनसे अनेक लाभ प्राप्त होते हैं।

3) **सरकार की मदद :—** सरकार के ऋणों का भुगतान तथा विक्रय संबंधी समस्त कार्य इन बैंकों के द्वारा ही किये जाते हैं। करों तथा अन्य भुगतानों को एकत्रित करने का कार्य भी यह बैंक करते हैं।

4) **धन की सुरक्षा :—** व्यापारिक बैंक न केवल लोगों के अतिरिक्त धन को जमा करने का कार्य करते हैं अपितु उन्हें लॉकर-सुविधा भी प्रदान करते हैं।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 18 का अथवा का उत्तर

स्थिर विनिमय दर के विपक्ष में तर्क :— स्थिर विनिमय दर के विपक्ष में तर्क इस प्रकार हैं :—

1) नियंत्रित अर्थव्यवस्था :— स्थिर विनिमय दर को स्थिर बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि अर्थव्यवस्था में अनेक कठोर नियंत्रण लगाए जाएं। यदि कठोर नियंत्रण लगाना संभव नहीं होता तो विनिमय दर में परिवर्तन करना पड़ता है।

2) आर्थिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव :— स्थिर विनिमय दर में सरकार का प्राथमिक उद्देश्य इसमें स्थिरता बनाए रखना होता है तथा राष्ट्रीय आय, राष्ट्रीय नीति व मूल्य-स्तर जैसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय विषयों को गौण मान लिया जाता है।

3) भ्रष्टाचार :— स्थिर विनिमय दर की अवस्था में अर्थव्यवस्था में अनेक कठोर नियंत्रण लगाए जाते हैं। नियंत्रण अधिक होने के कारण भ्रष्टाचार में भी वृद्धि हो जाती है।

4) विनिमय दर में आकस्मिक परिवर्तन :— स्थिर विनिमय दर की अवस्था में मुद्रा में दुर्बलता आ जाती है जिसके कारण उसका अवमूल्यन करना आवश्यक होता है। इसका विदेशी व्यापार व भुगतान संतुलन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(13) + =

पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 13 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 19 का उत्तर

प्रत्यक्ष कर तथा अप्रत्यक्ष कर में अंतर :—

प्रत्यक्ष कर	अप्रत्यक्ष कर
1) जिस कर का करघात एवं करापात एक ही व्यक्ति पर पड़ता है उसे प्रत्यक्ष कर कहते हैं।	1) जिस कर का करघात एवं करापात अलग-अलग व्यक्तियों पर पड़ता है उसे अप्रत्यक्ष कर कहते हैं।
2) प्रत्यक्ष कर में लोचता का गुण पाया जाता है।	2) अप्रत्यक्ष कर में लोचता का अभाव रहता है।
3) प्रत्यक्ष कर आय के असमान वितरण को कम करने में सहायक होते हैं।	3) अप्रत्यक्ष कर आय के असमान वितरण को कम करने में असमर्थ रहते हैं।
4) प्रत्यक्ष कर निश्चित होते हैं। जैसे - आयकर, [illegible] आदि। ~~इसमें सि~~	4) अप्रत्यक्ष कर अनिश्चित होते हैं। जैसे - मनोरंजन कर आदि।

B
S
E

14

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 14 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 20 का अथवा का उत्तर

जब दो चर-मूल्यों में परिवर्तन समान अनुपात में होता है अर्थात् जब दो चर-मूल्य समान अनुपात में परिवर्तित होते हैं तो उसे रेखीय सहसंबंध कहते हैं। इसमें दोनों चर-मूल्यों में परिवर्तन समान रूप से होता है एक चर-मूल्य जिस अनुपात में परिवर्तित हो रहा है ठीक उसी अनुपात में दूसरा चर-मूल्य भी परिवर्तित होता है

इसके विपरीत, जब दो चर-मूल्यों में परिवर्तन समान अनुपात में नहीं होता है अर्थात् जब दो चर-मूल्यों में समान अनुपात में परिवर्तन नहीं होता तो उसे अरेखीय सहसंबंध (का अनुपात समान) कहते हैं। इसमें दोनों चर-मूल्य समान अनुपात में परिवर्तित नहीं होते। एक चर-मूल्य जिस अनुपात में परिवर्तित होता है उस अनुपात में दूसरा चर-मूल्य परिवर्तित नहीं होता।

B
S
E

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 21 का उत्तर

कार्ल पियर्सन सहसंबंध गुणांक के दोष :— इसके प्रमुख दोष निम्नलिखित हैं :—

1) रेखीय-संबंध :— कार्ल पियर्सन सहसंबंध गुणांक यह मान लेता है कि विभिन्न पदमालाओं के मध्य रेखीय संबंध विद्यमान रहता है चाहे यह संबंध उनके मध्य विद्यमान हो अथवा नहीं।

2) दूरस्थ मद :— कार्ल पियर्सन सहसंबंध गुणांक का मूल्य दूरस्थ मद से बहुत अधिक प्रभावित हो जाता है।

3) निर्वचन :— कार्ल-पियर्सन गुणांक की ±1 सीमाओं का बहुत सावधानीपूर्वक निर्वचन आवश्यक होता है अन्यथा इससे प्राप्त परिणाम शुद्ध नहीं होंगे।

4) समय :— कार्ल-पियर्सन सहसंबंध गुणांक की गणना करने में बहुत अधिक समय लगता है जो इसका मुख्य दोष है।

प्रश्न क.

प्रश्न क्र. 22 का उत्तर

वस्तु की माँग

पूर्णतया लोचदार माँग

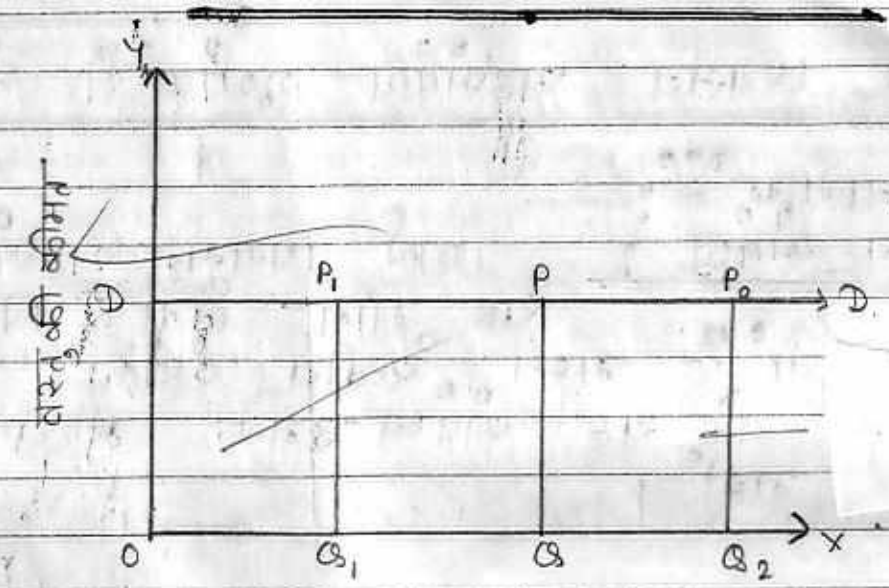

B
S
E

पूर्णतया लोचदार माँग :- जब वस्तु की कीमत में परिवर्तन न होने पर भी उसकी माँग में बहुत अधिक परिवर्तन हो जाता है तो उसे पूर्णतया लोचदार माँग कहते हैं।

चित्र द्वारा स्पष्ट है कि माँग वक्र है तथा X अक्ष पर वस्तु की माँग DD तथा Y अक्ष पर वस्तु की कीमत दर्शायी गयी है। Y अक्ष पर वस्तु की कीमत P_1, P, P_0 समान है परंतु उनकी माँग Q_1, Q, Q_0 में परिवर्तन हो रहा है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 23 का अथवा का उत्तर

प्राथमिक क्षेत्र :— अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र से आशय उस क्षेत्र से होता है जिसमें कृषि तथा वनों से प्राप्त पदार्थों को सम्मिलित किया जाता है। इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार की खाद्य सामग्री, कपास, लकड़ी, गन्ना आदि को सम्मिलित किया जाता है।

B
S
E

द्वितीयक क्षेत्र :— अर्थव्यवस्था से आशय के द्वितीयक क्षेत्र से आशय उस क्षेत्र से है जिसमें विभिन्न संसाधनों का रूप परिवर्तित करके उसे अधिक उपयोगी बनाया जाता है। इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार के होटल, मशीनें, उद्योग, विद्युत व जलापूर्ति आदि को सम्मिलित किया गया है।

तृतीयक क्षेत्र :— अर्थव्यवस्था के तृतीयक क्षेत्र से आशय उस क्षेत्र से है जिसमें किसी वस्तु का प्रत्यक्ष उत्पादन न होकर सेवाएँ सम्मिलित होती हैं। डॉक्टर, शिक्षक, आदि सभी की सेवाएँ तृतीयक क्षेत्र में सम्मिलित की गई हैं।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ [illegible] =

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 25 का अथवा का उत्तर

कीन्स के रोजगार सिद्धांत की आलोचना :— कीन्स के रोजगार सिद्धांत की आलोचना इस प्रकार है :—

1) उपभोग में परिवर्तनों का विनियोग पर प्रभाव की उपेक्षा :— कीन्स का सिद्धांत 'विनियोग में परिवर्तनों का उपभोग पर प्रभाव' अर्थात् गुणक की तो व्याख्या करता है परंतु यह 'उपभोग में परिवर्तनों का विनियोग पर प्रभाव' अर्थात् त्वरक की व्याख्या नहीं करता है।

2) बेरोजगारी की समस्या का अपूर्ण ज्ञान :— कीन्स का सिद्धांत चक्रीय बेरोजगारी की तो व्याख्या करता है परंतु इसके द्वारा तकनीकी व घर्षणात्मक बेरोजगारी की व्याख्या नहीं की जाती।

3) उपभोग प्रवृत्ति की गलत अवधारणा :— कीन्स का सिद्धांत यह मानता है कि उपभोग व्यय केवल वर्तमान आय पर ही निर्भर करता है। जो एक गलत अवधारणा है।

4) एकपक्षीय सिद्धांत :— कीन्स ने अपने सिद्धांत में समग्र पूर्ति कीमत को

प्रश्न क्र.

स्थिर माना है। साथ ही वह यह मानता है कि समग्र मांग, समग्र पूर्ति को नियंत्रित करती है। इस प्रकार कीन्स ने अपने सिद्धांत में पूर्ति पक्ष की पूर्णतः उपेक्षा की है।

5) अल्पकालीन सिद्धांत :— कीन्स का सिद्धांत एक अल्पकालीन सिद्धांत है इस कारण यह दीर्घकालीन नीतियों पर काम नहीं करता। व्यावहारिक जगत में भी कीन्स का यह सिद्धांत एक उपयोगी सिद्धांत नहीं कहा जा सकता है।

प्रश्न क्र. 25 का उत्तर

बजट का महत्व :— बजट का महत्व इस प्रकार है :—

1) हिसाबदेयता का उद्देश्य :— प्रजातांत्रिक प्रणाली में सरकार जनता के प्रति हिसाबदेयता के लिए उत्तरदायी है। जनप्रतिनिधियों को यह जानने का अधिकार होता है कि सार्वजनिक धन का उपयोग किस प्रकार हो रहा है तथा सरकार पूर्व स्वीकृतियों का पालन कर रही है या नहीं। इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति बजट के द्वारा ही होती है।

प्रश्न क्र.

2) **आर्थिक नियंत्रण :—** बजट के द्वारा संसद सार्वजनिक कोषो की प्राप्ति व उनके प्रयोग के संबंध मे नियंत्रण रखती है साथ ही इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उचित नीतियों का निर्माण भी करती है।

3) **आर्थिक स्थिरता :—** बजट का एक प्रमुख महत्व आर्थिक स्थिरता को बनाए रखना होता है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की एक प्रमुख विशेषता उच्चावचन का पाया जाना है बजट उन कारकों को उद्घाटित करने मे सहायक है।

4) **राजकोषीय उपकरण :—** बजट केवल आय-व्यय का विवरण मात्र न होकर सरकार के हाथ मे एक ऐसा शक्तिशाली उपकरण होता है जिसकी सहायता से वह देश का तीव्र आर्थिक विकास कर सकने के सक्षम हो जाती है।

5) **योजनाओं से संबंधित :—** आर्थिक विकास के संदर्भ मे योजनाओ से संबंधित बजट बनाए जाते है। सरकार आर्थिक विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु नीतियां निर्धारित करती है तथा उन्हे प्राप्त करने का प्रयास करती है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 26 का अथवा का उत्तर

निर्देशांक की रचना के प्रमुख चरण :- निर्देशांक रचना के प्रमुख चरण निम्नलिखित हैं :-

1) **निर्देशांक निर्माण का उद्देश्य :-** निर्देशांक की रचना से पूर्व हमें इस तथ्य की जानकारी होनी चाहिए कि, निर्देशांक की रचना किन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की जा रही है ?

B 2) **मदों का चुनाव :-** निर्देशांक की रचना करते समय ऐसी मदों का चुनाव
S किया जाना चाहिए जो संपूर्ण क्षेत्र का प्रतिनिधित्व
E करें।

3) **आधार वर्ष का चुनाव :-** निर्देशांक की रचना करते समय, ऐसा आधार वर्ष लिया जाना चाहिए जो सामान्य हो अर्थात जिसमें किसी प्रकार की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक व व्यापारिक असामान्य घटना घटित न हुई हो।

4) **प्रतिनिधि मूल्यों का चुनाव :-** वस्तुओं के मूल्य प्रायः दो प्रकार के होते हैं :-

i) थोक मूल्य, ii) खुदरा (फुटकर) मूल्य।

अतः निर्देशांक निर्माण करते समय किस मूल्य को लेना है यह निर्धारित किया जाना चाहिए।

प्रश्न क्र.

5] माध्य का चुनाव :— निर्देशांक का निर्माण करते समय उचित माध्य का चुनाव करना भी आवश्यक होता है।

6] भार निर्धारण का ढंग :— निर्देशांक का निर्माण करते समय वस्तुओं को दिये जाने वाले भार का निर्धारण करना भी आवश्यक है।

BSE